प्रथम अध्याय

नागार्जुन व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रथम अध्याय

नागार्जुन : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

अ) जीवनवृत्त

1. जन्म तथा बचपन
2. शिक्षा
3. विवाह तथा गृहस्थ जीवन
4. घुमक्कड़ प्रवृत्ति
5. समाजसेवा तधा साहित्य सेवा
6. मृत्यु

आ) व्यक्तित्व

(क) बाह्यपक्ष

1. सहजता एवं सादापन
2. स्पष्टवक्ता
3. सर्वहारा वर्ग के प्रति आत्मीयता

(ख) आंतरिक पक्ष

1. सामान्य जन के प्रति करुणा के भाव
2. दायित्वहीनता
3. स्त्री-स्वातंत्र्य के पक्षपाती
4. विद्रोही वृत्ति
5. आडंबर के प्रति घृणा
6. स्वातंत्रप्रिय
7. जबरदस्त ज्ञानलालसा
8. घुमक्कड़ प्रवृत्ति

इ) कृतित्व की विशेषता

1. जनकवि
2. विविध समस्याओं पर लेखन
3. कविता की ओर रुचि अधिक

ई) नागार्जुन का साहित्य

1. हिंदी उपन्यास
2. मैथिली उपन्यास
3. कहानीसंग्रह

4. निबंधसंग्रह
5. मैथिली काव्यसंकलन
6. हिंदी में काव्यसंग्रह
7. संस्कृत रचनाएँ
8. अनुवाद
9. बालसाहित्य
10. निराला पर लघुप्रबंध
11. हिंदी काव्य
    * प्रकृति चित्रण से युक्त कविताएँ
    * प्रणयभाव की कविताएँ
    * लौटती कविताएँ
    * यथार्थपरक कविताएँ
    * सामाजिक यथार्थ
    * आर्थिक स्थितियों का यथार्थ
    * राष्ट्रीयता भाव की रचनाएँ
    * व्यंग्यपरक कविताएँ
    * विचार दर्शन की कविताएँ
    * श्रद्धांजलि युक्त कविताएँ

उ) विविध पुरस्कार एवं सम्मान

ऊ) कुल निष्कर्ष

* * *

प्रथम अध्याय
नागार्जुन : व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रस्तावना :-

"पैदा हुआ था मैं -
दीन-हीन अपठित किसी कृषक कुल में
आ रहा हूँ पीता अभाव का आसव ठेठ बचपन से
कवि? मैं रूपक हूँ दबी हुई दूब का
हरा हुआ नहीं कि चरने को दौड़ते।।
जीवन गुजरता प्रतिपल संघर्ष में।।" [1]

ये काव्यपंक्तियाँ हैं महान साहित्यकार नागार्जुन के 'युगधारा' काव्यसंग्रह से। हिंदी और मैथिली साहित्य के शीर्षस्थ रचनाकार के रूप में नागार्जुन का स्थान रहा है। हिंदी साहित्य में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिंदी ही नहीं बल्कि मैथिली, पंजाबी, मराठी आदि भाषाओं में भी उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है।

सर्वहारा वर्ग को केंद्र में रखकर लेखन करने वाले नागार्जुन आम जनता को 'अपने' लगते हैं। हिंदी में उनका लेखन बहुविधात्मक रहा है। हिंदी में उपन्यास, कहानी, कविता, खंडकाव्य, निबंधलेखन, अनुवादलेखन्, साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं का संपादन कार्य भी उन्होंने किया है। उनका साहित्य भोगा हुआ यथार्थ है। वे खुद निम्नवर्ग में पले-बढ़े, इसी कारण आम आदमी की पीड़ा, दुख-दर्द उन्होंने बचपन से ही जाना-पहचाना है। आम आदमी के बीच बड़े होने के कारण किसी भी जगह आम इन्सान में सहज ही घुलमिल जाते थे। जनता के प्रति निकट संपर्क के कारण उन्हें 'जनकवि' कहा जाता है। साहित्यसम्राट प्रेमचंद के बाद सर्वहारा वर्ग का सही चित्रण हमें नागार्जुन के साहित्य में देखने को मिलता है। शहरों में आलिशान घरों में रहकर आम आदमी पर लेखन करने वाले बहुत सारे होते हैं मगर उनके बीच रहकर उनकी पीड़ा को लेखनी में उतारने वाले बहुत कम मिलते हैं। उनमें नागार्जुन का नाम आता है। जिनके सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्ष में कहीं कोई अंतर नहीं होता, ऐसे रचनाकारों में नागार्जुन सर्वोपरि थे। "नागार्जुन मार्क्सवाद से प्रभावित रहे हैं। एक समय वे पार्टी के सदस्य भी थे। लेकिन उनमें कोरा सैद्धांतिक मार्क्सवाद नहीं है, बल्कि वे समाज से भी सीधे जुड़े हैं।" [2]

नागार्जुन ने हिंदी में बहुविध लेखन किया है। मगर उनकी ज्यादातर रचनाएँ बिखरी हुई हैं। घुमक्कड़ी स्वभाव के कारण वे कभी भी एक जगह टिक नहीं पाए। परिणामतः उनकी रचनाएँ भी यहाँ-वहाँ बिखरी थीं, जिनका खुद उनको भी हिसाब नहीं था, जिनमें से कुछ के शीर्षक भी उन्हें याद नहीं थे। उनकी रचनाओं में हमेशा शोषितों के प्रति सहानुभूति और शोषकों के प्रति घृणा नजर आती है। साहित्य में ही नहीं बल्कि अपने जीवन में भी उन्होंने हमेशा जमींदारों या धनिक वर्गों का विरोध ही किया है। साथ ही किसान आंदोलनों में हिस्सा लेकर जेल भी काटी है।

नागार्जुन ने अपनी खंड-खंड कविताओं में भी समकालीन भारतीय समाज का सिलसिलेवार चित्रण किया है। सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले, सादगी और सरलता से परिपूर्ण, प्रतिभासंपन्न कवि शायद हो और कोई हो।

अ.1. जीवनवृत्त : जन्म तथा बचपन :-

मैथिली में 'यात्री' तथा मित्र परिवार और राजनीति में 'नागाबाबा' नाम से पहचाने जाने वाले नागार्जुन का असली नाम है 'वैद्यनाथ मिश्र'। वैसे तो नागार्जुन की जन्मतिथि के बारे में कोई निश्चित प्रमाण नहीं है। उनके जन्म के बारे में अनेक मत हैं। "डॉ. जयकांत मिश्र के *'A History of Maithily Literature'* में उनका जन्म 1908 को माना है। 'हिंदी साहित्यकोश' में 1910 को, तो डॉ. प्रकाशचंद्र भट्ट के अनुसार 1911 को इनका जन्म माना जाता है। नागार्जुन की नानी के मत से उनका जन्म 1911 को ही हुआ है।"[3]

नागार्जुन का जन्म उनके ननिहाल में हुआ था। स्पष्ट है, उनकी नानी के मत से 1911 ही उनकी जन्मतिथि माननी चाहिए।

विविध मतांतरों के बाद जून 1911 ई. को जेष्ठ मास की पूर्णिमा को इनका जन्म माना जाता है। नागार्जुन का जन्म उनके ननिहाल ग्राम 'सतलखा', पोस्ट 'मधुबनी', बिहार राज्य के दरभंगा जिले में हुआ था। लेकिन पितृग्राम दरभंगा से दस-पंद्रह मिल दूर 'तरौनी' नामक ग्राम है।

नागार्जुन के पहले चार भाई-बहनों का देहांत हो जाने के पश्चात उनके पिता गोकुल मिश्र ने वैद्यनाथ धाम (देवघर) जिला संथाल परगना जाकर दीर्घायुषी पुत्रप्राप्ति के लिए व्रत किया था। तभी जाकर माता-पिता की पाँचवीं संतान नागार्जुन का जन्म हुआ। इनका जन्म सनातनधर्मी, अशिक्षित, संस्कारहीन, दरिद्र ब्राह्मण परिवार में हुआ था। मैथीली ब्राह्मण होकर भी इनके पूर्वज खेती करते थे। मगर पसीना बहाकर इनके पूर्वजों ने कभी खेती नहीं की। ज्योतिष का अध्ययन-अध्यापन इनके पूर्वजों का प्रमुख व्यवसाय रहा। 'वाचस्पति' जैसे महापाध्यायों का उल्लेख इनके पूर्वजों में मिलता है। इनके पूर्वज अल्पपठित होकर गाँव में रहते हुए अंग्रेजों के परिवारों की निगरानी तथा अपनी थोड़ी-सी खेती-बाड़ी में संतुष्ट थे। उनका संबंध विद्या से ज्यादा धरती से था। नागार्जुन के पिता घुमक्कड़ स्वभाव के, लापरवाह तथा दायित्वहीन इन्सान होने के कारण पिता के प्रति उनका स्नेहभाव पहले से ही कम था। पिता की धमकियों के कारण बालक नागार्जुन के हृदय को बचपन में ही ठेंस पहुँची थी। बचपन से ही परिवार के प्रति उदासी उत्पन्न हुई थी।

पिता की घुमक्कड़ी प्रवृत्ति तथा दायित्वहीनता का बालक नागार्जुन पर प्रभाव पड़े बिना कैसे रहता? परिणामस्वरूप उन्होंने भी अपने जीवन में घुमक्कड़ी प्रवृत्ति को अपनाया। विद्रोही वृत्ति दिन-ब-दिन बढ़ती गई, जिसका रूप आगे चलकर उनके कई वर्षों तक प्रवास में दिखाई दिया। उन्होंने न केवल भारत के विभिन्न प्रांतों बल्कि नेपाल तथा श्रीलंका तक भ्रमण किया।

नागार्जुन चार साल के ही थे कि उनकी माँ 'उमादेवी' का देहांत हो गया। उनकी माँ सरल, ईनामदार स्वभाव की परिश्रमी महिला थी। इनकी सभी संतानों में केवल नागार्जुन ही बचे थे। पति के दायित्वहीनता के कारण उमादेवी पर घर-परिवार, खेती-बाड़ी का दायित्व आ पड़ा था।

नाना के यहाँ से मिली भू-संपत्ति की देखभाल के लिए पिता गोकुल मिश्र के साथ 'महिषी' ग्राम में बालक वैद्यनाथ मिश्र का बचपन बीता। कोसी नदी की छोटी शाखा घेमुड़ा नदी के किनारे बसे इस गाँव से नागार्जुन की बचपन की स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं।[4]

2. शिक्षा :-

परिवार की आर्थिक वित्रशता के कारण बालक नागार्जुन को अंग्रेजी शिक्षा के बदले संस्कृत शिक्षा लेनी पड़ी। उन दिनों ब्राह्मण कुमारों को अध्ययन के लिए धनी सेठों से निःशुल्क व्यवस्था थी। अंग्रेजी स्कूल में न पढ़ा सकने की विवशता पिताजी को हमेशा खलती रही, फिर भी संस्कृत पढ़वाकर पुत्र को विद्वान बनाने की इच्छा उन्होंने कभी नहीं छोड़ी। वे प्रायः कहा करते थे, "सेंत-मेंत में लड़का पढ़कर तैयार हो जाएगा, अपनी तो एक कौड़ी नहीं लगेगी। उल्टे पढ़ाई के दिनों में भी चाहेगा तो हमारी मदद करता रहेगा।"[5]

शिक्षा की दृष्टि से तरौनी ग्राम उस आँचल में हमेशा आगे रहा है। तरौनी में संस्कृत की तीन पाठशालाएँ थीं। दो लोअर प्रायमरी स्कूल, एक अपर प्रायमरी स्कूल और कुछ दूर पर मिडिल स्कूल था। उन दिनों लोगों को शिक्षा के प्रति इतनी अभिरुचि नहीं थी। लेकिन ब्राह्मण लोग अपने बच्चों को संस्कृत पढ़ाते-पढ़वाते थे। ब्राह्मण परंपरा के अनुसार नागार्जुन ने भी संस्कृत में अध्ययन शुरू किया। अध्ययन के दौरान ही वे संस्कृत की कविताएँ करने लगे। तरौनी में प्राथमिक शिक्षा लेने के बाद एक साल पछगछिया (सहरसा) में और बाद के चार साल काशी तथा कोलकाता में 'साहित्यशास्त्राचार्य' की उपाधि प्राप्त की। काशी में कविरत्न सीताराम झा से भाषा, छंद आदि का अध्ययन किया। नागार्जुन संस्कृत कविताओं के लिए कई बार पुरस्कृत भी हुए। नागार्जुन अपने प्रथम काव्यगुरु श्री अनिरुद्ध मिश्र को मानते थे। उन्होंने प्राकृत तथा मागधी में भी नाटक लिखे। साथ-साथ 1930 में जैन मुनियों के संपर्क के कारण पाली का भी अध्ययन हुआ। वहीं बौद्ध धर्म के समता वाले सिद्धांत का भी ज्ञान प्राप्त हुआ।

नागार्जुन की रुचि पहले से ही काव्य की ओर अधिक थी। लेकिन उनकी काव्यनिर्माण की प्रवृत्ति से गुरुजन ज्यादा खुश नहीं थे। मिथिला तथा काशी के पंडित काव्य निर्माण की प्रवृत्ति को उपेक्षा से देखते थे। व्याकरण तथा न्यायशास्त्र की चर्चा में प्रतिद्वंदियों को पछाड़ने वाले को अधिक महत्व दिया जाता था। मगर नागार्जुन तो कविता में डूबे थे। इसी कारण गुरुजनों की राय यह थी कि, "लड़का बिगड़ गया है। दिन-रात 'रजनी-सजनी' में लगा रहता है। बुद्धि को प्रखर बनाने की तरफ इसका ध्यान ही नहीं है। कविताओं के चलते प्रजा फुरफुरी हो गई है।"[6]

गुरुजनों के आदेश पर चलते तो शायद समाज को एक परंपरावादी पंडित प्राप्त होता। मगर हिंदी साहित्य को तो व्यंग्यकार नागार्जुन की जरूरत थी। काशी के विद्वत्तापूर्ण माहौल से ऊब जाने के कारण ही वे काशी से कोलकाता चले गए होंगे। इसके पीछे आर्थिक असुविधा का कारण भी हो सकता है। शायद आर्थिक असुविधा ने भी उन्हें कोलकाता जाने को बाध्य किया हो।

3. विवाह तथा ग्राहस्थ्य जीवन :-

शिक्षा-दीक्षा के बाद 1931 में नागार्जुन का विवाह अपराजिता देवी से हुआ। 1934 को गौना हुआ। घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के नागार्जुन को विवाह भी एक जगह नहीं बाँध सका। पत्नी के प्रति प्रेम तथा आत्मीयता होते हुए भी वे उसे उचित स्नेह नहीं दे सके। घर में लगातार तीन-चार महीनों से ज्यादा नहीं रुकते थे। इसी बीच उनको छः संतानें हुईं। शोभाक्रांत, श्यामकांत, सुकांत, श्रीकांत, मंजु और उर्मिला। पिता की यायावरी प्रवृत्ति और अर्थाभाव के कारण, साथ ही बच्चों के प्रति उपेक्षा के कारण उनके बच्चे उचित शिक्षा नहीं प्राप्त कर सके। रहने को छोटा-सा मकान तथा छोटी-सी खेतीबाड़ी में ही उनको उपजीविका चलानी पड़ी। पुराना मकान और खेती में अपनी पूरी जिंदगी में वे कोई परिवर्तन नहीं कर सके। जमीन से थोड़ी-सी उपज और प्रकाशक से मिलने वाली रॉयल्टी ही उनकी उपजीविका रही आमदनी का प्रमुख साधन रहा 'कलम घिसाई'।

शादी के कुछ दिनों बाद ही अपने 'अपू' (अपराजिता देवी : पत्नी को वे प्यार से अपू कहते थे।) तथा अपने घर को छोड़कर 1934 से भारत के विभिन्न प्रांतों में घूमते रहे। इसका मतलब यह नहीं कि वे परिवार के प्रति बिल्कुल निश्चिंत थे, बल्कि बीच-बीच में परिवार पर ध्यान देते थे।

नागार्जुन के पिता की मृत्यु के पश्चात घर तथा खेती का उत्तरदायित्व अपने हाथ में लेकर उसी से अपना तथा बच्चों का जीवनयापन अपराजिता देवी करती रही। इसी बीच नागार्जुन ने अपना संपूर्ण जीवन भ्रमण में लगा दिया और लगातार तीन-तीन बरस घर आने का नाम नहीं लिया। परिश्रमी, ईमानदार तथा सरल स्वभाव की अपराजिता देवी ने उनके ऐसे स्वभाव के साथ मानो समझौता कर लिया था।

4. घुमक्कड़ प्रवृत्ति :-

पिता की घुमक्कड़ प्रवृत्ति का बचपन से ही बालक नागार्जुन पर प्रभाव पड़ा था। परिणामतः उन्होंने भी आगे चलकर यायावरी जीवन अपनाया। रोगग्रस्त शरीर तथा आर्थिक परिस्थिति का नागार्जुन की घुमक्कड़ी प्रवृत्ति पर कोई असर नहीं पड़ा। उन्होंने जो अमर्याद साहित्यलेखन किया वह कभी एक जगह बैठकर नहीं किया। यूँ ही प्रवास के दौरान लिखते रहे। उनकी ढेरों कविताएँ बिखरी पड़ी हुई हैं जिनकी कोई गिनती उनके पास नहीं थी।

विवाह के कुछ ही दिनों के बाद 1934 में घर छोड़कर घूमना शुरू किया। पंजाब, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश आदि भारत के विभिन्न प्रांतों में घूमते रहे। इसी बीच देहाती लोगों के अधिक संपर्क में आने के कारण उनके दर्द, उनकी परेशानियों को अच्छी तरह समझ सके। इसी दौरान आठ-दस महीनों तक उन्होंने पंजाब में 'दीपक' मासिक का संपादन कार्य किया और स्वामी केशवानंद से आशीर्वाद ग्रहण कर दक्षिण की ओर प्रस्थान किया।

1936 में लंका प्रवास के दौरान वामपंथी नेताओं से नागार्जुन का अधिक संपर्क बढ़ने से वामपंथ की ओर गहरा लगाव होता गया। लंका में कोलंबो के निकट केलानिया में 'विद्यालंकार परिवेण' नामक पुराना विश्वविद्यालय है, जो बौद्ध जगत में विख्यात है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन,

SHRI. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

आचार्य जगदीश कश्यप, भदंत आनंद कौशल्यायन आदि भारतीय बोद्ध विद्वानों से प्रेरणा पाकर नागार्जुन ने भी इसी विश्वविद्यालय से बौद्ध दीक्षा ग्रहण की। 'विद्यालंकार परिवेण' में रहकर बौद्ध संन्यासियों को संस्कृत के माध्यम व्याकरण तथा दर्शन पढ़ाने में अपना संस्कृत का ज्ञान उन्हें उपयोगी सिद्ध हुआ। इसके साथ ही स्वयं भी पाली भाषा के माध्यम से वहाँ के विद्वानों द्वारा बौद्ध दर्शन का अध्ययन करते रहे। 1938 में नागार्जुन तिब्बत जाने के लिए सिंहल से भारत लौटे।

आजीविका के बारे में नागार्जुन ने कभी गंभीरता से नहीं सोचा। कभी भी एक जगह न टिक पाने के स्वभाव के कारण पत्नी अपराजिता देवी थोड़ी-सी पुश्तेनी खेती के सहारे परिवार के भरण-पोषण का प्रबंध करती रही। उन्होंने कभी कोई बंधन स्वीकार नहीं किया।

नागार्जुन यायावर बने, बरसों तक घर की तरफ रुख नहीं करते। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि परिवार से एकदम विपरीत हो गए हों। घुमक्कड़ी के बीच भी परिवार की चिंता बनी रहती थी। परिवार से बिल्कुल विमुख भी तो नहीं थे। बाबा के ही शब्दों में, "देखो, ऐसा होता है। हमने नौकरी की ही नहीं तब स्थायी गृहस्थी कैसे होती। पत्नी गाँव में ही रही। जमीन हैं। ब्राह्मणी का मन लगता है वहाँ। उसके वहाँ रहने से कुछ प्राप्ति हो पाती है, जमीन से। हमारा खेती में मन नहीं। गाँव जाते रहते हैं लेकिन एक पल जो वह लगातार, निरंतर गृहजीवन होता है, वह हमारा हुआ नहीं। कभी ये, कभी वो, उसमें पचास झंझट है। हमारी अपनी घुमक्कड़ी की पचासों ललक है। घुमक्कड़ होने का यह मतलब नहीं कि हम घरेलू आदमी नहीं है। जहाँ रहते हैं वहाँ हमारा घर ही होता है, समझ गए ना? नितांत पारिवारिक दृष्टिकोण है हमारा। जितने भी मित्र हैं, स्नेहभाजन नए साहित्यकार हैं, सबसे बिल्कुल घरेलू नाता है हमारा।"[7]

थोड़े दिन जेल काटने के बाद एवं लंका लौटने के पश्चात पिताजी ने नौकरी करने के लिए कहा। लेकिन अब नौकरी मिलना आसान नहीं था, क्योंकि घर आने के बाद भी खुफिया पुलिस उनके यहाँ चक्कर काट रही थी। अतः पिताजी की नाराजी दूर करने के लिए मैथिली में किताबें छपवाकर रेलगाड़ियों में मुसाफिरों को बेचकर आई हुई आमदनी पिता को समर्पित करते। इस नई खूबी का पता चलने पर पिता ने उनसे कहा था, "वह काम तो मैं भी कर सकता हूँ, हाट बाजार में जाकर दस-बीस किताबिया जरूर बेच आऊँगा। अपना तम्बाकू और घर की सब्जी का खर्च चलेगा। बहू यहीं रहेंगी। तुम बाहर चले जाओ, अच्छी भली नौकरी ढूँढ़ लो।"[8] जीविका के लिए इसी क्रम में नागार्जुन पंजाब पहुँचे। साथ में अपनी पत्नी अपराजिता देवी को भी लुधियाना ले गए। वहाँ जैन मुनि आत्मारामजी महाराज के साहित्यिक कार्यों में इन्होंने योगदान दिया।

1943 में नागार्जुन के पिता की मृत्यु हुई। पिता की मृत्यु के पश्चात घर तथा खेतीबाड़ी का दायित्व अपराजिता देवी के ऊपर आ पड़ा। मात्र दस कट्ठा जमीन के सहारे वह अपने परिवार का जीवनयापन करती रही। इसी बीच नागार्जुन ने संपूर्ण रूप से साहित्यसेवा और घुमक्कड़ी जीवन को अपना लिया और लगातार तीन-तीन बरस घर लौटने का नाम नहीं लिया। अपने जीवन का अधिकांश समय उन्होंने घूमने में काट दिया था।

5. समाजसेवा तथा साहित्यसेवा :-

सिंहल प्रवास के दौरान नागार्जुन पर वामपंथी विचारधारा का विशेष प्रभाव पड़ा। 'लंका-सम' समाज के नेताओं से गहरा संपर्क बढ़ता गया। एक ओर भारतीय किसानों के नेता स्वामी सहजानंद से पत्रव्यवहार चल रहा था तो दूसरी ओर राहूल जी (राहूल सांकृत्यायन) उन्हें तिब्बत के प्राचीन मठों की ओर प्रेरित कर रहे थे। परंतु नागार्जुन को तो भूमिहीन मजदूर और गरीब किसानों का संघर्ष अपनी ओर खींच रहा था।

नागार्जुन की दूसरी गिरफ्तारी फारवर्ड ब्लाक की ओर से छपने वाले युद्धविरोधी परिपत्र के सिलसिले में हुई। बिहार में जमींदारों के खिलाफ राहूल सांकृत्यायन ने नेतृत्व किया था। वे खुद निम्नवर्ग में पैदा होने के कारण उन्होंने बचपन से ही किसान तथा मजदूर वर्ग की स्थिति अपनी आँखों से देखी थी, खुद सही थी। इसी कारण सर्वहारा वर्ग के प्रति उनका लगाव स्वाभाविक ही था। उन्होंने 'युगधारा' इस काव्यसंग्रह की 'रवि ठाकुर' नामक कविता में अपने इस बात की पुष्टी दी है -

"पैदा हुआ था मैं -
दीन-हीन-अपठित किसी कृषक कुल में
आ रहा हूँ पीता अभाव का आसव ठेव बचपन से।" [9]

शोषितों के प्रति सहानुभूति और शोषकों के प्रति घृणा उनके साहित्य में हमेशा देखने को मिलती है। निम्न वर्ग की बेबसी के प्रति उनके मन में विद्रोह की आग लग जाती थी। मन में एक प्रकार की तड़प पैदा होती थी। इसका प्रत्यय उनकी इस काव्यपंक्तियों में मिलता है -

रहोगे क्या तुम सदा गुलाम?
हमेशा खाओगे उच्छिष्ट?
बेचते रहेंगे पशु की भाँति
अरे, कब तक तुमको ये लोग? [10]

दूसरी बार भूमिगत होने की स्थिति में गिरफ्तारी हुई। इस वक्त भागलपुर जेल में आठ महीनों तक रखा। जेल से रिहा होने पर वृद्ध पिता रो पड़े और उन्हें गृहस्थाश्रम (घर) लौटने को बाध्य किया। रिहा होने से पूर्व पिताजी ने जेलर से मुलाकात की और रो-रोकर कहा कि, "यह लड़का वर्षों से भागा हुआ है। बुढ़ापे में हमें तो सता ही रहा है पर एक 'बछिया' की पीठ में छुरा घोंपकर बाबाजी बना घूमता है। इस कमाई को जब आप जेल से रिहा करने वाले हो तब वार देकर मुझे बुलवा लेंगे। हम चार जने मिलकर आएँगे और इसे पकड़कर घर ले जाएँगे।" [11]

पंजाब, राजस्थान, गुजरात, हिमाचल प्रदेश आदि से लेकर श्रीलंका, तिब्बत तक की यात्राएँ नागार्जुन ने की थीं। सभी जातियों के साथ घुल-मिलकर रहने के स्वभाव के कारण प्रवास में कहीं कोई कठिनाई नहीं आई। इसी दौरान जनसामान्य को करीब से देखने-समझने का अवसर प्राप्त हुआ। जहाँ कहीं भी सर्वहारा वर्ग पर अत्याचार होता देख नागार्जुन विचलित हो उठते थे। बाबा के ही शब्दों में, "हम गरीब किसान के साथ हैं, गरीब मजदूर के साथ हैं, हरिजन के साथ हैं। इनका

उद्धार हो ऐसा हम चाहते हैं। लोगों को खाने-पीने को मिले, वे अच्छी तरह से रह सकें। पहले का जो था उसमें सब बुरा ही बुरा नहीं, आज जो है उसमें सब अच्छा ही अच्छा नहीं। आज जो है मानवमात्र के लिए अच्छा हो उसे रखो, शेष फेंक दो।"[12] पीड़ित और शोषित वर्ग की पक्षधरता तो इतनी अधिक है कि उसपर कभी भी, कहीं भी अत्याचार हों तो ये तिलमिला उठते हैं। नागार्जुन ने स्वयं बचपन से दारिद्र्य से साक्षात्कार किया था। अपने भ्रमण के दौरान बार-बार मानव द्वारा मानव का उत्पीड़न अपने आँखों से देखा था। इसलिए पीड़ित वर्ग के प्रति सहानुभूति इनके साहित्य और जीवन में हमेशा रही। परंपराभंजक संस्कार तथा विद्रोही वृत्ति तो उनमें बचपन से ही थी। काशी में वृद्धा की लाश का दाहसंस्कार इसका उदाहरण है। प्रेमचंद के पश्चात भारतीय किसान और मजदूर के प्रति आत्मीयता और साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति देने का काम नागार्जुन ने ही किया है।

नागार्जुन साम्यवाद के प्रबल समर्थक बने। राहूल जी के नेतृत्व में किसान आंदोलन में हिस्सा लेने के बाद छपरा तथा हजारीबाग सेंट्रल जेल में दस महीनों तक रहने के बाद नागार्जुन, प्रेमचंद, निराला, मैथिलीशरण गुप्त आदि साहित्यकारों के संपर्क में आए। जनसामान्य की दबी हुई आवाज को चेतना देने के लिए ही उन्होंने अपनी लेखनी का उपयोग किया। जमींदारी वृत्ति के खिलाफ आवाज उठाने के लिए तत्कालीन समाज के प्रति कटु व्यंग्य अपनी कविताओं तथा इतर साहित्य में किया है। 'व्यंग्य' उनकी रचनाओं की विशेषता रही है। कविता का ध्येय लोकहित होने के कारण उन्होंने लोकभाषा को ही अपनाया। विद्वत्तापूर्ण भाषा के बदले उन्होंने जनसामान्य की सीधी, सरल, बोलचाल की भाषाशैली का अपने साहित्य में उपयोग किया। नागार्जुन अपने व्यक्तिगत जीवन में जितने सहज तरीके से जीवन जीते थे, साहित्य में भी वह उतनी ही सहजता से अभिव्यक्त हुआ है।

6. मृत्यु :-

महान साहित्यकार नागार्जुन जीवन के कई साल तक दमे के प्रकोप से बेहाल थे। आर्थिक विवशता के कारण वे अपना समय पर इलाज नहीं कर सके थे। रोगग्रस्त होकर भी इन्होंने मृत्यु तक साहित्यसेवा की।

'5 नवंबर, 1998' इस महान जनकवि का स्वर्गवास हुआ।[13]

आ) व्यक्तित्व :-

अंग्रेजी शब्द 'पर्सनॅलिटी' का हिंदी अनुवाद है व्यक्तित्व। व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्ति के बाह्यपक्ष - बाहरी रूप और आंतरिक पक्ष - अंतर्मन की वृत्तियों का समावेश होता है।

(क) बाह्यपक्ष :-

व्यक्तित्व के बाह्यपक्ष के अंतर्गत व्यक्ति की शारीरिक बनावट, रूपरंग, वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन आदि बातों का समावेश होता है।

1. सहजता एवं सादापन :-

नागार्जुन की जिंदगी एक खुली किताब की तरह है। उन्होंने केवल व्यक्तिगत दुख की ओर ध्यान न देकर व्यापक दुख को समेटने की कोशिश की है। भ्रष्टाचार, राजनैतिक धोखेबाजी, सांप्रदायिकता, आडंबर के खिलाफ आवाज उठाने वाले नागार्जुन के व्यक्तित्व में जो सहजता और फक्कड़पन मिलता है वह अन्यत्र दुर्लभ है। बातचीत में इतने सरल कि सहज ही आत्मीयता का व्यवहार करेंगे। नागार्जुन ऐसे एकमात्र साहित्यकार थे, जिन्होंने हमेशा साफ कहने की हिम्मत की।

"दुबला पतला शरीर, मोटे खद्दर का कुर्ता, पाजामा, मझौला कद, आँखों पर ऐनक, पैरों में चप्पलें, चेहरे पर उत्साह और पीड़ित वर्ग के प्रति व्यथा की मिली-जुली प्रतिक्रिया के भाव यही नागार्जुन है।"[14]

रहन-सहन में सादापन परंतु फक्कड़पन उनके आचरण में पूरी तरह था। अपने प्रति लापरवाह होते हुए भी समाज के प्रति चिंतनशील तथा प्रयत्नशील! यह व्यक्ति सर्वहारा वर्ग के प्रति अत्यंत संवेदनशील था।

सादगीभरा रहन-सहन रखने वाले नागार्जुन कपड़ों को भी इस्त्री नहीं करते थे। मगर हमेशा साफसुथरा पहनते थे। उन्होंने कभी नियमित हजामत नहीं की। ना ही बाल-दाढ़ी की कभी परवाह की। बाल हमेशा बिखरे हुए रहते थे। कुर्ता-पाजामा हमेशा सफेद रहता था।

2. स्पष्टवक्ता :-

विनोदप्रिय परंतु स्पष्टवक्ता नागार्जुन गलत बातों का खंडन करने में बिल्कुल हिचकिचाते नहीं थे। किसी भी बात पर वे अपना स्पष्ट शब्दों में मत देते थे। उन्होंने हमेशा सच्चाई का रास्ता अपनाया। झूठ, आडंबर के प्रति उनके मन में घृणा पैदा होती थी।

3. सर्वहारा वर्ग के प्रति आत्मीयता :-

नागार्जुन अभावों में जन्मे साहित्यकार (कवि) हैं। पीड़ित वर्ग का कष्ट स्वयं झेलने वाला ऐसा व्यक्ति ही भारत की निम्नवर्गीय जनता का सच्चा प्रतिनिधित्व कर सकता है।

नागार्जुन कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे। मगर किसी भी पार्टी के साथ उनका समर्थन वहीं तक रहता था, जो पार्टियाँ मजदूर और किसानों के हित में सोचती हों। वे सिद्धांततः मार्क्सवादी होने के कारण शोषित समाज की पीड़ा का चित्रण उनकी रचनाओं में उभरकर आया है।

नागार्जुन ने हिंदी ही नही, तो अन्य भाषाओं का भी अध्ययन किया था, अतः रेडियो पर विविध भाषाओं में प्रस्तुत होने वाले कार्यक्रम सुनना उन्हें पसंद था। साथ ही नशा-पानी की आदत न होने के बावजूद कभी-कभार तंबाकू खाना तथा नशा सुंघना चलता था। चाय पीने को मिले तो खुश होते थे। अगर नहीं मिले तो भी दुःखी नहीं होते थे। मित्रों की खातिर कभी-कभी शराब पीनी पड़ती।

1948 में नागार्जुन पर दमा का प्रकोप हुआ। एक बार आया हुआ यह मेहमान उनका आजीवन साथी बनकर रह गया। परिवार की आर्थिक परिस्थिति कमजोर होने के कारण दमे का इलाज कभी

लगातार नहीं कर सके। परिस्थितिवश अस्वस्थ रहने की विवशता हो गई थी। इसी विवशता में ही वे सुख का अनुभव करते थे।

(ख) आंतरिक पक्ष :-

व्यक्तित्व के आंतरिक पक्ष के अंतर्गत मनुष्य का स्वभाव, उसकी रुचि, उसके गुण, उसके जीवनमूल्य, नैतिकता, प्रतिभा तथा मानसिक उथल-पुथल आदि चीजों का समावेश होता है।

1. सामान्यजन के प्रति करुणा के भाव :-

बचपन से अभावग्रस्त जीवन जीने के कारण नागार्जुन को सामान्यजन की पीड़ा हमेशा सताती थी। यही पीड़ा आगे चलकर क्षोभ तथा आक्रोश में बदल गई। उनमें सामान्य लोगों के प्रति करुणा तथा वेदना के भाव स्थिर हो गए थे। आर्थिक अभाव से जुझने की मानो उन्हें आदत ही हो गई थी। उनके प्रशंसनीय साहित्य लेखन के कारण उन्हें दस-पंद्रह हजार रुपए के दो पुरस्कार मिले थे। साथ-साथ और भी कुछ आमदनी प्राप्त हुई थी। बाबा नागार्जुन हमेशा लोगों के बीच रहे।

2. दायित्वहीनता :-

पिता की घुमक्कड़ी प्रवृत्ति एवं दायित्वहीन स्वभाव का असर बचपन से ही नागार्जुन पर पड़ा था। उन्हें अनेक पुरस्कार मिले थे। मगर लापरवाह एवं दायित्वहीन स्वभाव के कारण उन्होंने ज्यादातर पूँजी ऐसे ही इधर-उधर उड़ा दी। न घर बनवाया, न कोई खेतीबाड़ी में परिवर्तन किया।

लापरवाह तथा घुमक्कड़ होकर भी नागार्जुन संवेदनशीलता एवं भावुक व्यक्ति थे। अगर ऐसा ना होता तो जनसामान्य के प्रति उनके मन में इतनी करुणा शायद उत्पन न होती।

3. स्त्री स्वातंत्र्य के पक्षपाती :-

नागार्जुन स्त्री स्वातंत्र्य के पक्षपाती रहे हैं। उन्होंने अपनी दो बेटियों को जितना स्नेह दिया, उतना ही बहुओं के साथ भी स्नेहपूर्ण व्यवहार किया। उनको गुस्सा जल्द आता था मगर अल्पकाल में शांत भी हो जाता था।

नागार्जुन स्त्री को स्वतंत्र अस्तित्व में देखना चाहते थे। उसे बंदी बनाकर भिक्षुणी के रूप में वे उसे नहीं देखना चाहते थे उसे स्वतंत्र रूप में विचरित होते हुए देखना चाहते थे। 'युगधारा' में संकलित 'भिक्षुणी' कविता में कवि ने अपने विचार व्यक्त किए हैं।

बचपन में ही माँ-बाप ने भगवान बुद्ध के चरणों में भिक्षुणी को डाल दिया है। जब से यह समझाने लगी है (समझदार हुई है।) तब से वह भगवान बुद्ध को देखती आई है। बचपन में ही फुल-सी बच्ची को विहार में छोड़कर चले जाने वाले माँ-बाप के प्रति दिल में असंतोष रखकर भिक्षुणी अपने दिल की बात कहती है। -

"भगवान अमिताभ, सहचर मैं चाहती
चाहती अवलंब, चाहती सहारा
देकर तिलांजलि मिथ्या संकोच को

हृदय की बात, लो कहती हूँ आज मैं -
कोई एक होता
कि जिसको
अपना मैं समझती
भूख मातृत्व की मेरी मिटा देना,
स्त्रीत्व का सुफल पाकर अनायास
धन्य मैं होती।"[15]

4. विद्रोही वृत्ति :-

पिता की दायित्वहीनता तथा स्नेह के बदले उपेक्षा मिलने के कारण नागार्जुन में बचपन से ही विद्रोही प्रवृत्ति बढ़ती गई थी। विद्रोही स्वभाव के कारण नागार्जुन ने सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जमकर संघर्ष किया है। इस विद्रोही प्रवृत्ति को उन्होंने सदैव रचनात्मक दिशाओं की ओर सक्रिय किया है। उनकी दृष्टि हमेशा वहाँ रही है जहाँ विशाल जन-समुदाय अपने भविष्य को सुखी बनाने के लिए उठने को प्रयासरत है। उनका संपूर्ण साहित्य व्यापक मानवीय संवेदना से भरा हुआ है।

पूरी उम्र विद्रोह में गुजरे और परिणाम के नाम पर कुछ हाथ न लगे तो विक्षोभ का होना स्वाभाविक है। विक्षोभ के क्षणों में कटु व्यंग्य का जन्म होता है। नागार्जुन की व्यंग्य में रचित अनेक रचनाएँ कालजयी बन गई हैं।

5. आडंबर के प्रति घृणा :-

नागार्जुन को आडंबर के प्रति घृणा थी। वे सिर्फ सच्चाई चाहते थे। सच बोलना और सच सुनना ही उन्हें पसंद था। राजनैतिक नेताओं के दंभ, धोखेबाजी से नागार्जुन के मन में अत्यंत क्षोभ पैदा होता था। इस क्षोभ का रूपांतर व्यंग्य के माध्यम में होता था, जिसके निशाने से कोई भी राजनैतिक नेता छूटा नहीं। उनकी रचनाओं में शोषकों के प्रति व्यंग्यपूर्ण शैली अपनाई गई है। उनके समस्त रचना संसार में मार्क्सवाद की झलक कहीं न कहीं दिखाई देती है।

6. स्वातंत्र्यप्रिय :-

नागार्जुन किसी भी प्रकार का बंधन नहीं स्वीकारते थे। स्त्रीस्वातंत्र्य के पक्षधर नागार्जुन ने खुद को भी कभी किसी बंधन में कैद नहीं किया।

7. जबरदस्त ज्ञानलालसा :-

नागार्जुन की ज्ञानलालसा जबरदस्त थी। मातृभाषा मैथिली को छोड़कर उन्होंने हिंदी, अंग्रेजी, पालि आदि भाषाओं का भी अध्ययन किया था। रेडियो पर हमेशा बहुभाषी कार्यक्रम सुनते रहते। इतना ही नहीं तंगहाली में जीने वाले नागार्जुन बंगाली, मराठी, पंजाबी आदि पत्रों को खरीदकर पढ़ते थे।

"नागार्जुन को इतनी भाषाएँ बखूबी आती हैं, वे धड़ल्ले से उन्हें पढ़ लेते हैं : मातृभाषा मैथिली, पैतृक भाषा संस्कृत, पालि, अर्धमागधी, अपभ्रंश, सिंहली, तिब्बती, मराठी, गुजराती, बंगाली,

पंजाबी, सिंधी इत्यादि। सिर्फ पढ़ते ही नहीं, रुचि से उनके नवीनतम साहित्य और कविता शैलियों से अपने आपको परिचित कराते रहते हैं। 'बाबा' के पास कल के भोजन के पैसे नहीं हैं, पर दिल्ली में सेंट्रल न्यूज एजन्सी से दस नई बंगाली, मराठी, पंजाबी पत्र-पत्रिकाएँ खरीद कर ले जा रहे हैं।"[16]

उपरोक्त उदाहरण से हम समझ सकते हैं कि नागार्जुन को विविध प्रकारों से ज्ञान प्राप्त करने की कितनी लालसा थी।

8. घुमक्कड़ प्रवृत्ति :-

नागार्जुन की घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के कारण वे जनसामान्य से इतने घुलमिल गए थे कि इनको कहीं भी देखा जा सकता था। आज यहाँ तो कल वहाँ, असम, उड़िसा से लेकर राजस्थान, कश्मीर तक।

शरीर से रोगग्रस्त और आर्थिक तंगहाली के बावजूद उनकी इस प्रवृत्ति पर कोई असर नहीं हुआ। "किसी स्टेशन पर दरी में बंधा अपना सामान लिए, कभी साहित्य सम्मेलन में बैठकर बौद्ध ग्रंथों का सम्मान करते हुए, कहीं कालिदास पर भाषण देने हेतु और कभी मजदूरों के बीच बीड़ी पीकर हो-हो कर हँसते हुए। इसका कोई ठिकाना नहीं।"[17]

बचपन से दरिद्रता तथा भ्रमण के दौरान मानव द्वारा मानव का उत्पीड़न अपनी आँखों से देखने के कारण पीड़ित वर्ग के प्रति सच्ची सहानुभूति अपने जीवन और साहित्य दोनों में दिखाई देती है।

9. निष्कर्ष :-

मार्क्सवादी विचारों से प्रभावित नागार्जुन प्रेमचंद के सच्चे उत्तराधिकारी माने जाते थे। निम्नवर्ग में जन्मे नागार्जुन को शोषित-पीड़ित जनता के सच्चे हितैषी के रूप में देखा जा सकता है। माताविहीन होकर तथा पिता की लापरवाही के परिणामस्वरूप बचपन से ही घुमक्कड़ी और विद्रोही प्रवृत्ति उनके स्वभाव में दृष्टिगत होती है। सरल, सीधे रहने वाले, शीघ्रकोपी नागार्जुन सामान्य जन में सहज ही घुलमिल जाते थे। उनके दो-तीन बार जेल जाने से उनमें राष्ट्रप्रेम की झलक मिल जाती है।

अभावग्रस्त जीवन जीकर भी उनमें स्पष्टवक्ता की तथा स्वाभिमानी प्रवृत्ति पाई जाती है। घुमक्कड़ तथा लापरवाह होकर भी सर्वहारा वर्ग के प्रति आस्था उनमें पाई जाती है। उनके जीवन और रचनाओं में शोषकों के प्रति घृणा और शोषितों के प्रति करुणा दिखाई देती है।

इ) कृतित्व :-

नागार्जुन का कृतित्व प्रगतिशील चेतना का वाहक है। संस्कृत, मैथिली और हिंदी इन तीन-तीन अत्यंत संपन्न काव्यपरंपराओं के उन्नत संस्कारों का पुंजीभूत रूप है नागार्जुन का कृतित्व। हिंदी साहित्य में कवि और कथाकार दोनों रूपों में विख्यात है नागार्जुन।

नागार्जुन व्यक्तिगत जीवन में जितने सहज तरीके से जीवन जीते थे, साहित्य में भी वह जीवन उतनी ही सहजता से अभिव्यक्त हुआ है। समकालीन परिस्थितियों ने उनमें रचनाकार पैदा किया।

1. जनकवि :-

'जनकवि' नागार्जुन ने बहुविधात्मक लेखन किया है। उन्होंने कविता या काव्य से शुरुआत करके उपन्यास, निबंध, लघुप्रबंध, बालजीवनी, अनुवाद आदि विधाओं पर समग्र लेखन किया है। साथ ही पत्र-पत्रिकाओं का संपादन कार्य भी किया है। विविध विधाओं में तथा संस्कृत, मैथिली, हिंदी आदि विविध भाषाओं में उन्होंने अपनी लेखनी समान रूप से चलाई है। काव्य के प्रति उनकी रुचि सर्वाधिक है। "कविता में नागार्जुन की दिलचस्पी का दायरा बहुत बड़ा है। और बातों को छोड़ भी दें तो भावबोध और मानवीय स्थितियों की जैसी विविधता उनके यहाँ हैं वैसी अन्यत्र नहीं, उनकी कविता एक तरह से अपनी संपूर्णता में विगत चालीस वर्षों के भारतीय जीवन के उथल-पुथल की महागाथा है।" [18]

2. विविध समस्याओं पर लेखन :-

नागार्जुन का युग एक ऐसा युग था जिसमें राजनीतिक उथल-पुथल के साथ समाज अब भी पुरानी रूढ़ियों से जकड़ा हुआ था। घोर अशांतिपूर्ण इस युग में समाज में व्याप्त बालविवाह, पर्दाप्रथा, वैधव्य, अशिक्षा आदि के कारण स्त्रियों की दशा दयनीय थी। इन सभी समस्याओं पर नागार्जुन ने लेखनी चलाई। 'रतिनाथ की चाची' उपन्यास में विधवा समस्या, तो 'कुंभीपाक' में वेश्या बनने के लिए विवश स्त्रियों की समस्या उठाई गई है। 'पारो', 'इमरतिया', 'उग्रतारा' इन उपन्यासों में भी मिथिला की सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों का चित्रण किया है।

3. कविता की ओर रुचि अधिक :-

बचपन से नागार्जुन की रुचि कविता की ओर अधिक रही। उनकी सर्वप्रथम प्रकाशित रचना 'राम के प्रति' कविता 1935 में 'विश्वबंधु' साप्ताहिक में छपी। इसी समय मैथिली भाषा में उनकी कुछ कविताएँ या उपन्यास प्रकाशित हुए। मैथिली और संस्कृत से आरंभ कर नागार्जुन ने हिंदी साहित्य में पैर रखा। 'यात्री' नाम से मैथिली में लिखने वाले कवि नागार्जुन के काव्य का गुण यह है कि वे पूरे हिंदी प्रांत तथा पूरे देश की कविता लिखते थे। विविधता नागार्जुन के काव्य की एक और विशेषता है। नागार्जुन के काव्य के बारे में तिवारी जी लिखते हैं "नागार्जुन के काव्य के आस्वाद में विविधता है। उनके काव्य की भाषा में भी विविधता है। नागार्जुन के जीवन के अनुभवों में विविधता है। काव्य के आस्वाद और भाषा की विविधता का अनुभव वैविध्य से घनिष्ठ संबंध है।" [19]

ई) नागार्जुन का साहित्य :-

नागार्जुन का बहुविधात्मक लेखन इस प्रकार रहा है। हिंदी उपन्यास, मैथिली उपन्यास, कहानीसंग्रह, निबंधसंग्रह, मैथिली काव्यसंकलन, संस्कृत रचनाएँ, अनुवाद, बालसाहित्य, हिंदी काव्यकृतियाँ, साथ ही निराला पर लघुप्रबंध भी उन्होंने लिखा है। इसके अतिरिक्त हिंदी में खंडकाव्य भी रचे हैं।

1. **हिंदी उपन्यास :-** रतिनाथ की चाची (1948), बलचनमा (1952), नई पौध (1953), बाबा बटेसरनाथ (1954), वरुण के बेटे (1957), दुखमोचन (1957), कुंभीपाक

(1960), हीरक जयंती (1962), 'हीरकजयंती' ही 'अभिनंदन' नाम से प्रकाशित (1979), उग्रतारा (1963), इमरतिया (जमनिया का बाबा) (1968), पारो (1975)

उपरोक्त उपन्यासों में नागार्जुन ने जनसामान्य की पीड़ा को वाणी देने का प्रयत्न किया है। उनकी सभी रचनाएँ विशेषतः उपन्यास निम्नमध्यवर्ग पर आधारित होते हैं। 'रतिनाथ की चाची' का रतिनाथ कोई और पात्र न होकर 'स्वयं' नागार्जुन है। अपने तथा अपने आसपास की परिस्थितियों का सही चित्रण उन्होंने उपन्यासों में किया है।

2. मैथिली उपन्यास :- नवतुरिया, बलचनमा, पारो

3. कहानीसंग्रह :- आसमान में चंदा तेरे, विद्यापति की कहानियाँ

4. निबंध संग्रह :- बम भोलेनाथ, अन्नहीनम् क्रियाहीनम्

5. मैथिली काव्यसंग्रह :- चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (1969 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार)

6. हिंदी में काव्यसंग्रह :- भूमिजा, भस्मांकुर

7. संस्कृत रचनाएँ :- देश देशकम्, कृषक देशकम्, श्रमिक देशकम्

8. अनुवाद :- कालिदास का मेघदूत, जयदेव का गीतगोविंद, विद्यापति के गीत

9. बालसाहित्य :- अयोध्या का राजा, रामायण की कथा, कथा मंजरी, वीर विक्रम, बाल जीवनी (प्रेमचंद)

10. निराला पर लघुप्रबंध :- निराला : एक व्यक्ति : एक युग

11. हिंदी काव्यकृतियाँ :- युगधारा, प्यासी पथराई आँखें, सतरंगे पंखोंवाली, तालाब की मछलियाँ, तुमने कहा था, हजार-हजार बाहोंवाली, पुरानी जुतियों का कोरस, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, खून और शोले, चना जोर गरम, शपथ, अब तो बंद करो देवि यह चुनाव का प्रहसन।

"नागार्जुन हिंदी काव्यधारा के उन प्रमुख स्तंभों में हैं जिन्होंने कविता को रचा नहीं बल्कि उसको जिया भी। उनकी प्रखर सामाजिक चेतना यथार्थ से सीधा साक्षात्कार कराती है और जनजीवन से सीधे जाकर जुड़ती है।" [20]

नागार्जुन का रचनासंसार बृहद है। उन्होंने अपनी रचनाओं को संभालकर रखने की ओर कभी ध्यान नहीं दिया। यायावरी प्रवृत्ति वाले और मानसन्मान को सदा ठोकर मारने वाले नागार्जुन का, कविताएँ या रचनाएँ सँभालकर न रखने का परिणाम यह हुआ कि अनेक महत्वपूर्ण रचनाएँ अतीत के अंधःकार में खो गई। 'युगधारा' के प्रकाशक का मंतव्य इस संबंध में इस प्रकार है - "कुछ खो गई हैं, कुछ खो जाने की स्थिति में हैं, कुछ मित्रों के पास बिखरी पड़ी हैं और बाकी इस यात्री कवि के थैले में दरभंगा, पटना, इलाहाबाद, दिल्ली, दिल्ली-इलाहाबाद, पटना-दरभंगा सफर कर रही हैं।" [21]

हमारा शोधप्रबंध काव्यसंबंधी होने के कारण नागार्जुन की काव्यकृतियों की थोड़े में जानकारी प्राप्त करना उचित होगा। उनकी कविताओं को ठीक तरह से समझने के लिए उसका वर्गीकरण करना पड़ेगा। वैसे भी काव्यधारा का निश्चित वर्गीकरण करना दुष्कर कार्य है। फिर भी सुविधानुसार

मोटे तौर पर यह विभाजन कर लिया गया है। सामाजिक यथार्थ का चित्रण करते हुए संबंधित व्यक्ति को व्यंग्य का निशाना बना लिया है, तो कहीं-कहीं प्रकृतिचित्रण भी अच्छी तरह किया है।

*** प्रकृति-चित्रण से युक्त रचनाएँ :-**

यायावरी प्रवृत्ति के स्वभाव के कारण कवि नागार्जुन ने देश के विविध प्रांतों और विदेशों में सफर किया था। प्रवास के दौरान उन्होंने प्रकृति को उसके नाना रूपों में देखा। प्रकृतिसौंदर्य की सर्वाधिक प्रशंसित कविताओं में 'बादल को घिरते देखा है' महत्वपूर्ण कविता है। इसमें हिमालय की गोद में बसी झीलों में क्रीड़ा करते हुए हंसों, साथ ही कहीं पगलाए कस्तूरी मृग को कविता में प्रस्तुत किया है।

"तुंग हिमालय के कंधों पर
छोटी-बड़ी कई झीले हैं
उनके श्यामल नील सलील में
समतल देशों से आ-आकर
पावस की उमस से आकुल
तिक्त-मधुर बिस-तंतु खोजते
हंसों को तिरते देखा है
बादल को घिरते देखा है।" [22]

बसंत की अगवानी में उसके स्वागत के लिए कवि की ये पंक्तियाँ, वसंत का चित्र हमारे सामने उपस्थित कर देती हैं -

"वृद्ध वनस्पतियों की बूढ़ी शाखाओं में
पोर-पोर टहनी-टहनी का लगा दहकने
से निकले मुकुलों के गुच्छ गहराए
अलसी के नीले फूलों पर नभ मुस्काए।।" [23]

बसंत के आगमन से चारों ओर वातावरण उल्लासमय हो जाता है। कवि को बसंत खूब भाया है।

नागार्जुन ने कविता में कहीं-कहीं प्रकृति का मानवीकरण किया है, जो मनुष्य के सुख-दुख का भागीदार है। संक्षेप में नागार्जुन ने प्रकृति का सजीव और स्वाभाविक चित्रण अपनी कविताओं में किया है। यहाँ कवि के साथ-साथ प्रकृति भी उल्लासमय है। कवि का प्रकृति के साथ सहज और आत्मीयता का संबंध कायम होने के कारण यह सहजता और आत्मीयता कवि नागार्जुन में देखी जाती है। -

"धिन धिन धा धमक
मेघ बजे
दामिनी यह गई दमक
मेघ बजे

दादुर का कंठ खुला
मेघ बजे
धरती का हृदय खुला
मेघ बजे।"[24]

*** प्रणयभाव की कविताएँ :-**

प्रणय का संबंध भावुकता भरे क्षणों से होता है। कवि नागार्जुन के मन में अपनी प्रेयसी पत्नी के प्रति गहरी रागात्मकता है। घुमक्कड़ी जीवन अपना लेने के बाद प्रिया का विरह समय-समय पर मन को भावविभोर करता रहता है। नागार्जुन सामाजिकता के पक्षपाती रहने के कारण उनके प्रणयचित्र शालीनता से युक्त है। 'दंतुरित मुस्कान' कविता में कवि अपनी प्रेयसी पत्नी की दंतुरित मुस्कान के लिए प्रेयसी की माँ को धन्यवाद देता है। -

"यदि तुम्हारी माँ न माध्यम बनी होती आज
मैं न सकता देख
मैं न पाता जान
तुम्हारी यह दंतुरित मुस्कान।"[25]

यहाँ प्रवासी जोवन त्यागकर फिर से गृहस्थ धर्म में दीक्षित होने के बाद की स्थिति की अभिव्यंजना हुई है।

और एक जगह जब प्रेयसी गुनगुनाने लगी तो कवि ताल में अधखिला अरविंद लाने गया। उनके प्रेम का यह रूप प्रेरणादायी है, जिसमें मांसलता की गंध तक न होकर ऐसी भावाकुलता समर्पण ही पैदा करती है। टिकोरों की मादक गंध के बाद जब तारा उगा तो कवि ने देखा -

"पास ही सोई पड़ी रलथ कुंतला
प्रेयसी की थपथपाई पीठ
जग गई तो दिखाकर तारे दो-चार
कहा मैंने पकड़ तब हाथ
दो घड़ी का हमारा इनका रहा है साथ
हो रहे अब विदा, गाओ सुमुखी, एक विहाग
तुम जगी, संसार जाए जागा
गुनगुनाने लगी वह
मैं उठ गया
ताल में घुसकर स्वयं ही तोड़कर
अधखिला अरविंद लाने के लिए।"[26]

जिंदगी का अकेलापन दूर करने के लिए नागार्जुन अपनी सिगारेट पीने वाली प्रेमिका को 'आओ, प्रिय आओ' कहकर बुलाते हैं। व्यंग्यमिश्रित रागासक्ति को व्यंजित करती हुई इस कविता में

नागार्जुन रोमांस को इस प्रकार चित्रित करते हैं -

"झुकी पीठ को मिला। किसी हथेली का स्पर्श। तन गई रीढ़
महसूस हुई कंधों को पीछे से। किसी नाक की सहज उष्मा
निराकुल साँस। तन गई रीढ़। कौंधी कहीं चितवन
रंग गए कहीं किसी के होंठ निगाहों के जरिए जादू धुला अंदर।
तन गई रीढ़।" [27]

नागार्जुन की प्रणयानुभूति का गहनतम रूप 'यह तुम थी' में व्यक्त हुआ है, जहाँ वे अपने जीवन में प्रियतमा की छवि देखते हैं -

"सिकुड़ गई रग-रग। झुलस गया अंग-अंग।
बनाकर ठूँठ छोड़ गया पतझरा
अलग असगुन-सा खड़ा रहा कचनारा
अचानक उमगी डालों की संधि में छरहरी टहनी।
पोर-पोर में गए थे टूसे। यह तुम थी।" [28]

नागार्जुन की प्रणय कविताएँ समर्पण से उपजी हैं। प्रेम मनुष्य संवेदनाओं को विस्तार देने के साथ-साथ उसके सोच को भी मानवीय बना देता है।

*** लौटती कविताएँ :-**

प्रवास के दौरान नागार्जुन को स्वजनों की याद आती है। उनकी जीवनयात्रा का अधिकांश काल यायावरी, आंदोलनों और जेलों में बीता है। इनके बीच नागार्जुन जैसे संवेदनशील व्यक्ति का अपने पूर्ववर्ती जीवन से अनासक्त रह पाना नितांत असंभव है। बदलती हुई स्थितियाँ नागार्जुन की कविता को प्रभावित किए रहती हैं। ऐसी कविताओं को 'नास्टैल्जिक' या लौटती कविताएँ कही जा सकती हैं। 'सिन्दूर तिलकित भाल' जैसी कविता के भीतर उभरी हुई होमसिकनेस को महसूस किया जा सकता है।

"याद आते स्वजन, जिनकी स्नेह से भीगी अमृतमय आँख।
याद आता मुझे अपना वह 'तरउनी' ग्राम
याद आतीं लीचियाँ, वे आम
याद आते धान। याद आते कमल, कुमुदनी और ताल मखान।
याद आते शस्य श्यामल जनपदों के। रूप गुण अनुसार ही
रखे गए वे नाम।" [29]

*** यथार्थपरक कविताएँ :-**

आम आदमी की हैसियत से जीवन जीने वाले रचनाकार का दीन-हीन निम्न वर्ग के कष्टों, किसान-मजदूर के संघर्षों और भूखे-प्यासे लोगों की पीड़ाओं को गहराई के साथ महसूस करना स्वाभाविक है। धनिक वर्ग, जो ऐश-आराम में लिप्त है, 'कम काम और अधिक आराम' यह ध्यैर्य

रखने वाला यह वर्ग शोषण पर टिका हुआ है। परिणामस्वरूप उच्चवर्ग के प्रति घृणा नागार्जुन के मन में आक्रोश पैदा कर देती थी। पीड़ित जनता ने उन्हें सर्वाधिक प्रभावित किया है। सभी अर्थों में उन्होंने शोषित, पीड़ित, प्रताड़ित लोगों के दुखों को अपनी कविता के माध्यम से वाणी देने का प्रयत्न किया है।

वास्तविकता को नागार्जुन ने अपनी रचनाभूमि बनाया है। कहीं सामाजिक मर्यादाओं, तो कहीं राजनीति और राजनेताओं को व्यंग्य की पैनी धार से छीला है। शोषक और शोषित की दूरियों को सामने रखकर आर्थिक वैषम्य का चित्रण किया है।

*** सामाजिक यथार्थ :-**

आजादी के बाद सामाजिक स्थितियों में तेजी के साथ आए बदलाव तथा आजादी के अर्थ को कुछ जननायकों ने किस तरह उलट दिया इसका चित्रण नागार्जुन ने अपनी कविताओं के माध्यम से किया है। नागार्जुन प्रारंभ से जन-मन के सजग चितेरे रहे हैं। उनकी कविताओं में सामाजिक संघर्ष मुख्य रूप से मुखरित हुआ है।

अभावग्रस्त देश की स्थितियों को देखकर नागार्जुन बेचैन होते हैं। दाने-दाने के लिए तरसते पीड़ित वर्ग के खाली पेट की आवाज बुलंद करते हुए लिखते हैं -

"मकान नहीं खाली है, दुकान नहीं खाली है,
स्कूल नहीं खाली, खाली नहीं कालेज।
खाली नहीं टेबूल, खाली नहीं मेज,
खाली है हाथ, खाली है पेट
खाली है थाली, खाली है प्लेट।" [30]

इसके साथ-साथ अकाल के बाद फैली भूखमरी को नागार्जुन ने इस प्रकार व्यक्त किया है -

"कई दिनों तक चुल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उसके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।" [31]

निम्न मध्यवर्गीय जिंदगी की विसंगतियों को कवि नागार्जुन ने स्वयं भोगा है। इस बात को अपने 'एक मित्र को पत्र' में उन्होंने स्पष्ट किया है।

"क्योंकि हमको स्वयं भी तो तुच्छता का भेद है मालूम
कि हमपर सीधे पड़ी है गरीबी की मार
सुविधाप्राप्त लोगों ने सदा ही समजा भूभार।" [32]

प्रायमरी स्कूलमास्टर भी इसी निर्धनवर्ग में आता है जो अल्प वेतन में अपने बड़े परिवार का निर्वाह करने का असफल प्रयत्न कर रहा है। भूख से मरकर यमराज के सामने अपनी दशा इस प्रकार स्पष्ट करता है -

"पेशा से प्रायमरी स्कूल का मास्टर था।
तनखां थी तीन सौ रुपैया, सो भी नहीं मिली
मुश्किल से काटे हैं,
एक नहीं, दो नहीं, नौ-नौ महीने
धरती थी, माँ थी, बच्चे थे चार
आ चुके हैं वे भी दयासागर, करुणा के अवतार।
आपकी ही छाया में।"[33]

*** आर्थिक स्थितियों का यथार्थ :-**

शोषित और श्रमिक जनता के प्रति सहानुभूति का जो भाव नागार्जुन की कविताओं में देखने को मिलता है, उसके मूल में इन वर्गो का आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा होना है। आर्थिक अंतर्विरोध इस देश की वस्तुस्थिति हैं। जो गरीब है वह और अधिक गरीब होता चला गया है। -

"मैं दरिद्र हूँ, पुश्त-पुश्त की यह दरिद्रता
कटहल के छिलके जैसी जीभ से मेरा लहू
चाहती आई है। मैं न अकेला मुझ जैसे तो
लाख-लाख हैं, कोटि-कोटि हैं।"[34]

निर्धन वर्ग के बाद नागार्जुन की दृष्टि दलित वर्ग पर जाती है। दलित जीवन की यथार्थ और कटु स्थिति कवि पाठकों को दिखाता है। -

"चाट रहे हैं कुछ प्राणी बाहर जूठन के दोने
चहक रहे हैं अंदर ये लक्ष्मी के पुत्र सलोने
कला गुलाम हुई इनके आगे, कविता पानी भरती है।
सौ-सौ की मेहनत इनकी मुस्कानों पर मरती है।"[35]

इस गरीबी, इस बेकारी से नागार्जुन त्रस्त हैं। वे चाहते हैं, सबको रोजगार के समान अवसर मिलें, सबकी गरीबी दूर हो और इसलिए औद्योगिकीकरण में इसका समाधान वे खोजते हैं।

"जाने किस गौतम का पाकर शाप
सारी धरती बनी अहल्या हाय! मूर्च्छित है हल,
चूर-चूर हैं बैल। इसे चाहिए ट्रेक्टर का संस्पर्श।
लाख द्रौपदी माँग रही है चीर। वासुदेव भगवान अप्रतिम आज।
सौ-सौ तकुओं वाली मिलें हजार खुले, तभी
इनका होगा उद्धार।"[36]

इस तरह कवि ने देश में व्याप्त आर्थिक विषमता का चित्रण किया है। उन्हें आशा है कि एक न एक दिन सुराज आएगा, जहाँ किसी का शोषण नहीं होगा और सभी को उनका हक मिलेगा।

*** राष्ट्रीयता भाव की रचनाएँ :-**

दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही सामान्यजन की हालात से नागार्जुन चिंतित थे। प्रगति में देश को पिछड़ा हुआ देखकर वे भीतर ही भीतर दुखी हो जाते थे। सच्चा कवि विद्रोही होता है, वह अपने देश की जनता को गुलामी करता हुआ नहीं देख सकता। शोषकों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए वह जनता को उकसाता है। जिस मिट्टी में नागार्जुन पले, बड़े हुए, उससे लेकर समूचे देश के कण-कण से उनका गहरा लगाव रहा है।

"खेत हमारे भूमि हमारी सारा देश हमारा है।
इसीलिए तो हमको इसका चप्पा-चप्पा प्यारा है।"[37]

एक सच्चे देशभक्त के लिए राष्ट्रीयता एवं देशहीत को प्रथम स्थान होता है।

"आज तो मैं दुश्मन हूँ तुम्हारा
पुत्र हूँ भारतमाता का
और कुछ नहीं हिंदूस्थानी हूँ महज
प्राणों से भी प्यारे हैं मुझे अपने लोग
प्राणों से भी प्यारी हैं मुझे अपनी भूमि।"[38]

नागार्जुन उन क्रांतिकारियों का अभिनंदन करते हैं जो चुपचाप अपने काम में लगे हुए मुक्ति का आह्वान करते हैं। शोषकों को चुनौती देने वाले इन क्रांतिकारियों को कवि वाणी देता हुआ कहता है -

"मशीनों पर और श्रम पर, उपज के सब साधनों पर
सर्वहारा स्वयं करेगा अपना अधिकार स्थापित
दूहकर वह प्रांत जो कि मिटा देगा धरा की प्यास
करेगा आरंभ अपना स्वयं ही इतिहास।"[39]

मजदूरों को प्रेरणा देता हुआ कवि देश की वास्तविक स्थिति पर निर्भिकता से प्रकाश डालता है।

"देश हमारा भूखा-नंगा घायल है बेकारी से
मिले न रोटी-रोजी भटके दर-दर बने भिकारी-से
स्वाभिमान सम्मान कहाँ है, होली है इन्सान की
बदला सत्य-अहिंसा, बदली लाठी, गोली, डंडे हैं।
कानूनों की सड़ी लाश पर प्रजातंत्र के झंडे हैं।
निश्चय राज्य बदलना होगा शासक नेताशाही का
पद लोलुपता दलबंदी का भ्रष्टाचार तबाही का।"[40]

जब कभी भी देश पर आँच आई, वे देश के हित में कूद पड़े। भारत-पाक युद्ध के दौरान जवानों को प्रेरणा देने के लिए गीत एवं कविताएँ रचने का काम उन्होंने किया। बाहरी शक्तियों की सहायता

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

से पाकिस्तान ने भारत पर हमला करने का जो प्रयत्न किया था, तो उसे किस तरह दुम दबाकर भागना पड़ा, इसका चित्रण कवि ने बखूबी किया है। -

"वे हिटलर के नाती पोते
बाहरी शक्ति जिसका संबल
देखो पिटकर भागे कैसे
वे पाकिस्तानी दानवदल।"[41]

इस तरह सर्वहारा वर्ग के सच्चे हितैषी नागार्जुन ने सामान्यजन और अपने देश के लिए व्यापक रूप से लेखनी चलाई। वे हमेशा देश और देशवासियों के साथ रहे। छोटी-सी घटना भी उनके संवेदनशील मन को छू लेती थी और उसपर वे कविता रचते थे।

*** व्यंग्यपरक कविताएँ :-**

विद्रोही वृत्ति और व्यंग्य की मार नागार्जुन की कविताओं का मुख्य गुण रहा है। उन्होंने भ्रष्ट राजनीति तथा राजनेताओं पर तो व्यंग्य कविताएँ लिखी ही हैं, साथ ही धार्मिक, सामाजिक रूढ़ियों, आर्थिक विषमताओं पर भी करारा व्यंग्य किया है। ऐसा कोई वर्ग नहीं है, जो उनकी पैनी नजर से बचा हो। व्यंग्य पर उनकी मजबूत पकड़ है। क्षोभव्यंजक चुटीले व्यंग्य रचना के कारण नागार्जुन प्रायः सबसे अलग दिखते हैं। "डॉ. नामवर सिंह ने तो यहाँ तक कहा है कि कबीर के बाद हिंदी कविता में नागार्जुन से बड़ा व्यंग्यकार अभी तक कोई नहीं हुआ।"[42]

उन्होंने अपने समस्त काव्य में स्वातंत्र्योत्तर युग की समूची विभीषिका सामने रखने का प्रयास किया है। उनके व्यंग्य में पीड़ित जनता के प्रति करुणा, गरीबी की मार, प्रदर्शन प्रियता, बुद्धिहीन अवसरवादी नेतृत्व, सुदखोर, स्वार्थलिप्त बड़े लोग, स्वतंत्र देश में बहुत कम वेतन पाने वाले अध्यापकों की स्थिति आदि पर मार्मिक व्यंग्य किया है।

आजाद भारत के प्रधानमंत्री नेहरू पर पूँजीवादी देशों का प्रभाव पड़ने के कारण नेहरु सरकार ने लोगों के निजी हितों के समक्ष राष्ट्रीय हितों को ठुकरा दिया और गांधी के नाम को वोटों के लिए इस्तेमाल किया -

"संभलो, संभलो, पंडित नेहरू, दानवदल से नाता तोड़ो
आँख मिचौली बहुत हुई, बस महाकाल का सत्यानाशी दामन छोड़ो।
वतन समूचा रेहन रखकर क्या पाओगे?
किस मुँह से फिर गांधी जी के गुण गाओगे?"[43]

आजादी के कई सालों बाद भी स्थितियाँ ज्यों-की-त्यों रहीं। आज भी नेता लोग गांधी का नाम लेकर वोट बटोरने में लगे हुए हैं।

"बेच-बेचकर गांधी जी का नाम
बटोरो वोट
बैंक बैंलन्स बढ़ाओ
राजघाट पर बापू की वेदी के आगे अश्रु बहाओ।"[44]

कवि ने देखा है कि सच बोलना भी एक जुर्म बनकर रह गया है। सच बोलने वालों को हमेशा कष्ट उठाने पड़ते हैं और झूठ बोलने वालों को मेवा-मिसरी चखने मिलती है। इस बढ़ती हुई प्रवृत्ति पर कवि ने इस प्रकार व्यंग्य किया है -

"सपने में भी सच न बोलना, वरना पकड़े जाओगे
भैया लखनऊ दिल्ली पहुँचो, मेवा-मिसरी पाओगे
माल मिलेगा रेत सको यदि गला मजूर-किसानों का
हम मरभुक्खों से क्या होगा चरण गहो श्रीमानों का।"[45]

नागार्जुन की व्यंग्य की पैनी धार से कोई भी क्षेत्र बचा हुआ नहीं है। उन्होंने स्वस्थ व्यंग्य की जो परंपरा स्थापित की है, उससे हम सब परिचित ही हैं। डॉ. प्रकाशचंद्र भट्ट लिखते हैं - "अकेले नागार्जुन की ही कविता पढ़कर हिंदी कविता के व्यंग्य का आरंभिक रूप, विकास और उत्कर्ष की अवस्थाओं को जाना जा सकता है। वे हिंदी व्यंग्य काव्य के एकमात्र, सबल और सशक्त प्रतिनिधि हैं। व्यंग्य की विभिन्न स्तरों से उनकी कविता सजी हुई है। अशिव का प्रतिकार और समाज के मंगल का ध्येय उससे ध्वनित हो रहा है।"[46]

*** विचार दर्शन की कविताएँ :-**

नागार्जुन ने विचारदर्शन से युक्त कविताओं की रचना भी की है। वैज्ञानिक उपलब्धियाँ मानव के विकास और नाश दोनों स्थितियों की जिम्मेदार हैं। नागार्जुन मानव की प्रगति में सहायक विज्ञान के योग का स्वागत करते हैं।

"जनम-जनम के अभिशापों से
त्रिशंकुओं को मुक्ति मिलेगी
सौ-सौ विश्वामित्र बनेंगे
नई सृष्टि के नए विधाता
दिव्य धाम शोभित होंगे तब
दूर बसे उन नक्षत्रों पर।"[47]

लेकिन बम के विस्फोट में महानाश का, मानवता के विध्वंस का जो गर्जन समाया है, उससे नागार्जुन पीड़ित-से थे; क्योंकि इससे कला, संस्कृति, दर्शन सब नष्ट हो जाएगा। विज्ञान का विध्वंसकारी रूप कवि के लिए त्याज्य है।

*** श्रद्धांजलि युक्त कविताएँ :-**

नागार्जुन ने साहित्यकारों, राजनेताओं, क्रांतिकारियों आदि पर श्रद्धांजलियुक्त कविताएँ लिखी हैं।

'रविबाबू' कविता में रवींद्रनाथ टाकुर के महान गुणों का बखान करता हुआ कवि रविबाबू से प्रश्न करता है कि इतने बड़े उच्च कुल में पैदा होकर वैभवपूर्ण जीवन जीते हुए जनमन के गायक कैसे बन गए।

"कवि के रूप में हो गए विकसित कैसे तुम अचानक?
बाह्य आडंबर उतना भयानक/ गला क्यों न घोंट सका/
तुम्हारे महामानव का? कहाँ से मिली तुम्हें इतनी
अनुभूतियाँ/पीड़ित मनुष्यता के निम्नतम स्तर को।"[48]

नागार्जुन की 'शपथ' और 'तर्पन' कविता महात्मा गांधी जी को काव्यांजलि ही कही जा सकती है। क्रांतिचेता लेनिन को भी नागार्जुन ने अपनी कविता के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की है।

"तन वामन, व्यक्तित्व महान, श्रमिक जनों के सुख सुजान,
भूख जहालत के प्रतिकार, दलितवर्ग के तारणहार।
जय जय लेनिन, गुण अभिराम, जयति महामानव शुभनाम।"[49]

'चंदना', 'भिक्षुणी' कविताएँ संस्मरणात्मक हैं। जिनमें कवि ने इन पात्रों की जिंदगी के कड़वे-मीठे अनुभवों को अभिव्यक्ति दी है। पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन कर प्रस्तुत किया है। कवि ने 'भिक्षुणी' कविता में बौद्ध भिक्षुणी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया है। इसमें भिक्षुणी का अपने जीवन में ऊबकर मातृत्व की लालसा व्यक्त करना मनोवैज्ञानिक है।

'चंदना' कविता में सेठ-सेठानी द्वारा खरीदी गई बालिका पर सेठानी द्वारा अत्याचार किया जाता है। भूखी-प्यासी चंदना के हाथों भगवान महावीर भिक्षा ग्रहण करते हैं। अंत में चंदना भगवान के चरणों में अर्पित होती है।

'पाषाणी' कविता में राम द्वारा अहल्या उद्धार की कथा को एक नए रूप में व्यक्त किया है।

इसके साथ-साथ नागार्जुन ने 'भूमिजा' और 'भस्मांकुर' नामक दो पौराणिक खंडकाव्यों की भी निर्मिति की है। 'भूमिजा' में सीता का 'भूमि' में विलीन होने का प्रसंग है। 'वाल्मीकि रामायण' पर आधारित यह खंडकाव्य होकर सीता के माध्यम से भारतीय पतिव्रता स्त्री का दर्शन इसमें होता है। साथ ही राम जैसे भावना से ज्यादा कर्तव्य को श्रेष्ठता देने वाले पुरुषोत्तम के भी दर्शन होते हैं।

शिवद्वारा कामदहन का प्रसंग 'भस्मांकुर' में किया गया है। इसमें वसंत के आविर्भाव से लेकर कामदहन प्रसंग के पश्चात की आकाशवाणी तक अतिसंक्षिप्त कथावस्तु है। कालिदास के 'कुमारसंभवम्' से प्रेरणा ग्रहण करके कवि ने भस्मांकुर की निर्मिति की है। नागार्जुन कालिदास से पहले से ही प्रभावित रहे हैं।

उ) विविध पुरस्कार एवं सम्मान :-

- 1969 में मैथिली काव्यसंकलन 'पत्रहीन नग्न गाछ' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार।
- 1981 में उत्तर प्रदेश शासन की ओर से दीर्घकालीन हिंदी साहित्यसेवा के लिए विशिष्ट सम्मान।

- 1986 में उत्तर प्रदेश द्वारा साहित्य के सर्वोच्च सम्मान 'भारत-भारती' से सम्मानित।
- 1987 में मध्य प्रदेश द्वारा हिंदी कविता के सर्वोच्च सम्मान 'मैथिली शरण गुप्त सम्मान' से विभूषित।
- इसके अलावा और भी छोटे-मोटे 50 पुरस्कारों से सम्मानित।

ऊ) निष्कर्ष :-

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि जनकवि नागार्जुन एक सफल व्यंग्यकार माने जाते थे। उन्होंने अपनी सहज अभिव्यक्ति, सरल बोलचाल की भाषा तथा व्यंग्य की पैनी धार से जनसामान्य को वाणी देने का प्रयत्न किया।

अपने बहुविधात्मक लेखन से सर्वहारा वर्ग की आवाज को ऊपर उठाने का नागार्जुन ने आजीवन प्रयास किया। अपनी रचनाओं में तथा अपने जीवन में सर्वसामान्य के प्रति आस्था तथा सहानुभूति के द्वारा अपनी प्रतिभा को अमिट छाप छोड़कर सदा के लिए चले गए।

-: संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. युगधारा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 13
2. नागार्जुन : कवि और कथाकार - सत्यनारायण, भूमिका
3. उपन्यासकार नागार्जुन - बाबूराम गुप्त, पृष्ठ क्र. 1
4. नागार्जुन : जीवन और साहित्य - प्रकाशचंद्र भट्ट, पृष्ठ क्र. 19
5. नागार्जुन : जीवन और साहित्य - प्रकाशचंद्र भट्ट, पृष्ठ क्र. 20
6. नागार्जुन : जीवन और साहित्य - प्रकाशचंद्र भट्ट, पृष्ठ क्र. 22
7. नागार्जुन : कवि और कथाकार - सत्यनारायण, पृष्ठ क्र. 6
8. नागार्जुन : जीवन और साहित्य - प्रकाशचंद्र भट्ट, पृष्ठ क्र. 26
9. युगधारा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 13
10. रत्नगर्भ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 17
11. नागार्जुन : जीवन और साहित्य - प्रकाशचंद्र भट्ट, पृष्ठ क्र. 25
12. नागार्जुन : कवि और कथाकार - सत्यनारायण, पृष्ठ क्र. 9
13. बलचनमा - नागार्जुन
14. नागार्जुन : जीवन और साहित्य - प्रकाशचंद्र भट्ट, पृष्ठ क्र. 38
15. युगधारा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 19
16. नागार्जुन : कवि और कथाकार - सत्यनारायण, पृष्ठ क्र. 5
17. नागार्जुन : कवि और कथाकार - सत्यनारायण, पृष्ठ क्र. 5
18. नागार्जुन : कवि और कथाकार - सत्यनारायण, पृष्ठ क्र. 18

19. नागार्जुन की कविता - अजय तिवारी, पृष्ठ क्र. 28
20. नागार्जुन की कविता - अजय तिवारी, पृष्ठ क्र. 18
21. युगधारा : नागार्जुन, भूमिका
22. युगधारा : नागार्जुन, भूमिका
23. सतरंगे पंखोंवालो : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 31
24. तुमने कहा था : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 88
25. युगधारा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 33
26. युगधारा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 33
27. तालाब की मछलियाँ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 99
28. तालाब की मछलियाँ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 101
29. तालाब की मछलियाँ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 15
30. युगधारा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र.104
31. तालाब की मछलियँ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 114
32. युगधारा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 65-66
33. युगधारा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 88
34. तालाब की मछलियँ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 157
35. प्यासी पथराई आँखें : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 34
36. तालाब की मछलियँ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 69
37. प्यासी पथराई आँखें : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 13
38. तालाब की मछलियँ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 88
39. तालाब की मछलियँ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 3
40. नागार्जुन : कवि और कथाकार - सत्यनारायण, पृष्ठ क्र. 56
41. नागार्जुन : जीवन और साहित्य - प्रकाशचंद्र भट्‌ट, पृष्ठ क्र. 91
42. भूमिजा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 12
43. तालाब की मछलियँ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 116
44. युगधारा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 92
45. नागार्जुन : जीवन और साहित्य - प्रकाशचंद्र भट्‌ट, पृष्ठ क्र. 59
46. नागार्जुन : जीवन और साहित्य - प्रकाशचंद्र भट्‌ट, पृष्ठ क्र. 84
47. तालाब की मछलियँ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 157
48. तालाब की मछलियाँ : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 20
49. तुमने कहा था : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 21
50. भूमिजा : नागार्जुन, पृष्ठ क्र. 13

* * *